VOL. 44, APRIL - JUNE 2013

FOR FREE CIRCULATION WITHOUT ANY COMMERCIAL OBJECTIVE

In the Name of GOD

अन्तरध्वनि
The Inner Voice
आत्मा की आवाज़

अन्दर की पवित्रता

बाहर की प्रतिष्ठा

तथा

अन्दर + बाहर की प्रसन्नता के लिए

सच होता है मीठा किन्तु
कड़वा लगता क्यों है?

Life का business
कहीं loss में तो नहीं जा रहा?

Materialism & Spiritualism
का सुन्दर तालमेल कैसे बिठायें?

आत्मा की शुद्धि और शान्ति
शरीर की मृत्यु से पहले ही होती है,
बाद में नहीं। क्यों और कैसे?

TURN to God
before you
RETURN to God

MISSION CONSCIOUSNESS • MISSION HAPPINESS •
GOD bless you MORE

www.facebook.com/antar.dhwani.1

e-mail : contact@missionhappiness.in
visit us at www.missionhappiness.in

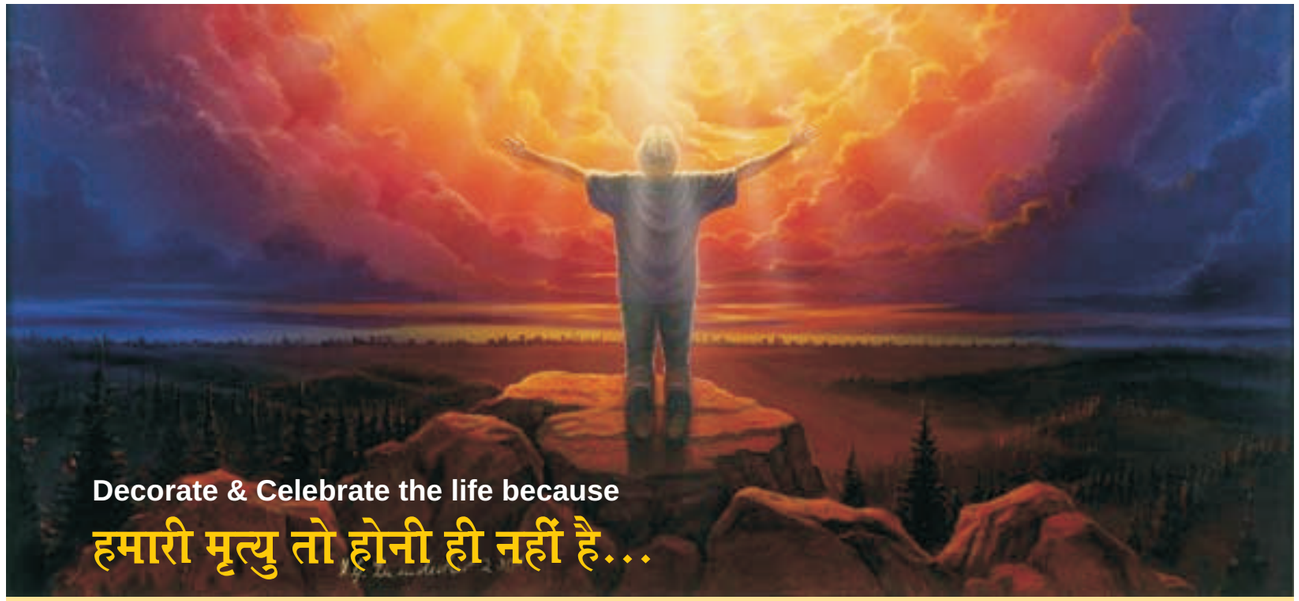

Decorate & Celebrate the life because

हमारी मृत्यु तो होनी ही नहीं है...

आम लोग मृत्यु से बहुत डरते हैं। क्यों ?

क्योंकि हमें आभास ही नहीं है कि हम body नहीं हैं। **हम तो एक पवित्र रूह हैं, जिसने कभी मरना ही नहीं है।**

इस अकाट्य सत्य की ज्यादातर लोगों को knowledge ही नहीं है और जिनको knowledge है – उन्होने आत्मा का experience ही नहीं किया।

Therefore सत्य से दूर होकर,

एक मजेदार life का मज़ाक बना लेते हैं। इसमें सबसे बड़ा role बुद्धि का है। अपने को body consciousness में रखने के कारण, मन कमज़ोर हो जाता है और vision की bankruptcy (दिव्य दृष्टि का अभाव) के कारण intellect बुद्धि का समुचित उपयोग नहीं कर पाते।

Intellect को use करके **हम जीवन को चलाने वाले कारणों और principles को पढ़ सकते हैं। हर घटना को ऊपर-ऊपर से face न करें,** उसके अन्दर के message में जाएं तो उनका solution भी easily मिल जाएगा।

इस life में accidently कुछ नहीं होता। बीमारी, क्लेश, अशान्ति, यह सभी हमारी ही creations हैं। **दूसरा कोई या परमेश्वर इसके लिए responsible नहीं है।** और practically देखिये, death होने पर हिन्दू कहते हैं – इनका देहान्त हो गया (देह का अन्त हुआ), मुस्लिम कहते हैं – इनका इन्तेकाल (transfer) हो गया, Christians कहते हैं – He/She has passed away, सिख कहते हैं – वह गुज़र गए।

तो मरे कहाँ? यहाँ से केवल गुज़र के ही तो गए। **So study life and succeed sweetly.**

We are energy, which is neither created nor destroyed.
It only changes its shape and role.
So let us go from facebook to HEARTBOOK

इस दुनिया में फ़कत कुछ दिन का मेहमान,
हद में क्यों नहीं रहता फिर भी ये इंसान ।

Courtesy :
Shri Mukhtar Ahmad Sahab
District Judge, Bareilly

Remember
GOD
Get Protected

माफ़ीनामा

या अल्लाह हम तुझी से मांगते हैं-

ऐसी माफी जिसके बाद गुनाह न हो,
ऐसी हिदायत जिसके बाद गुमराही न हो,
ऐसी रज़ा जिसके बाद नाराज़गी न हो,
ऐसी रहमत जिसके बाद अज़ाब न हो,
ऐसी कामयाबी जिसके बाद नाकामी न हो,
ऐसी इज्ज़त जिसके बाद ज़िल्लत न हो,

या अल्लाह मुझे दुनियां और आख़िरत की ज़िल्लत से बचा।
मुस्तकबिल के आने वाले दिन में सुकून अता फ़रमा।।

आमीन-सुम्मा आमीन

अल्लाह के नज़दीक दुआ से ज़्यादा बुलन्द मर्तबे वाली चीज़ कोई नहीं

"दुआ मोमिन का हथियार है।"
दुआ में मुझे भी याद रखना

तू अगर मुझे नवाज़े तो तेरा करम है मेरे मालिक
वरना तेरी रहमतों के काबिल मेरी बंदगी नहीं।।

Discovery of life through death

The Art of Leaving

जितना important जीना है, उससे ज्यादा या उतना ही important जाना भी है। The art of leaving को अनदेखा कर देने से उसकी importance कम नहीं हो जाती। **समझदार, समझदारी से जीते हैं और समझदारी से ही जाते भी हैं।**

किसी के भी घर पर हम प्रीतिभोज में इज्ज़त से तो जाएँ, परन्तु लड़-झगड़कर कर भोजन कर, बेइज्ज़त होकर वापस आएँ! क्या जीवन के साथ ऐसा ही नहीं हो रहा, चारों तरफ! But many exceptions are there.

Shri Rakesh Mittal jee, देश व U.P. में प्रतिष्ठित व सम्मानित I.A.S. officer रहे हैं। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री अमित मित्तल जी का युवावस्था में ऐसी disease से देहांत हो गया, जोकि काफी uncommon है। देश-विदेश में best possible treatment के उपरांत भी जब कोई सुधार नहीं हुआ तब अलौकिक शक्तियों से अलंकारित मित्तल दम्पत्ति ने न केवल उनकी अनुपम सेवा की, साथ में पूरे समाज को Kabir Peace Mission के माध्यम से उच्च जीवन जीने की प्रेरणा भी देते रहे।

10th May, 13 को अपने नवयुवक पुत्र के देहान्त पर उन्होने लखनऊ में **प्रार्थना व श्रद्ध ांजलि सभा की** - न कि शोक सभा। लखनऊ व बाहर से society की elite class उसमें उपस्थित थी। उनका स्पष्ट कहना था कि हमने व हमारे पुत्र ने पवित्र जीवन जिया है, इसलिए **जीना एक उत्सव था तो जाना भी एक उत्सव ही है।** सबसे आत्मीयता से मिले, चेहरे पर वही ओज, वही उत्साह। Mrs. Mittal जी का शान्ति व सौम्यता से सभी का अभिवादन करना, **एक चमत्कारिक शक्ति का उदाहरण था।**

क्या हम सभी को अपने जीने व जाने का स्तर ऐसा ऊँचा नहीं करना चाहिए?

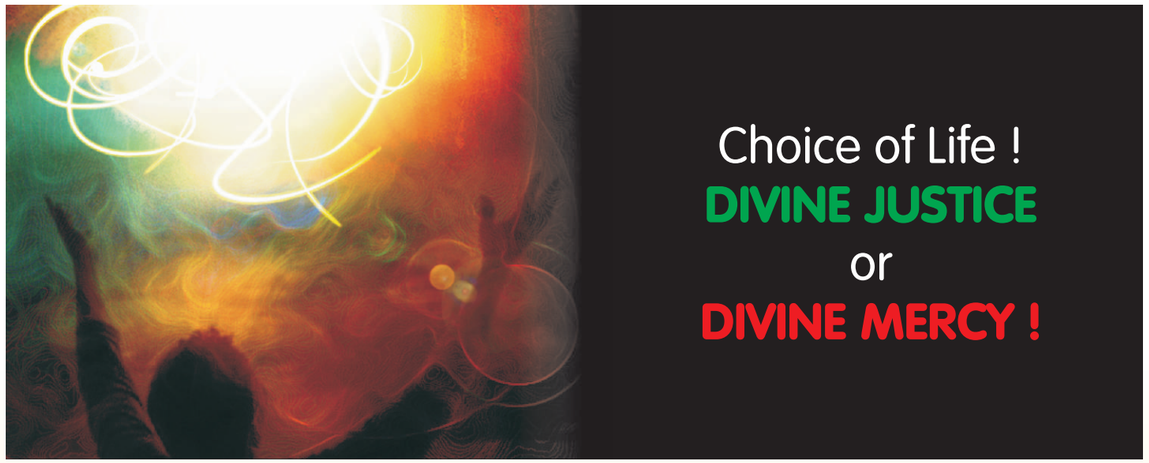

समझदार कौन?

Life को चलाने वाले दो important factors होते हैं –

न्याय (Justice) – कर्मों का सिद्धांत अथवा दया (Mercy) – Divine Miracles

इस संसार में ज्यादातर लोग, बेहोशी (अवचेतन मन) से ही ज़िन्दगी जी रहे हैं, rather काट रहे हैं। वे न तो divine laws को पढ़ते और समझते हैं और न ही परा शक्तियों, invisible cosmic powers से अपना सम्बन्ध स्थापित कर, उच्च जीवन जी पाते हैं। उनके जीवन में – जैसे कर्म करेगा, वैसे फल देगा भगवान, वाली God की policy लागू हो जाती है।

इसको ईश्वरीय न्याय कहते हैं

इसी के अन्तर्गत, life की difficulties, जैसे बीमारियाँ, कलह, क्लेश, Accidents, मुकदमे आदि face करने पड़ते हैं। इसको भोगयोनि भी कह सकते हैं। This is a state of unconsciousness living और **हम आगे का भाग्य भी अन्जाने में उल्टा-सीधा बनाते चले जाते हैं।**

On the other hand, **DIVINE MERCY**, **ईश्वरीय दया बहुत उच्च श्रेणी की जीवन प्रणाली है।** इसमें सच्चे हृदय से प्रायश्चित करते हुए **सदा-सदा के लिए ज्ञानवान व भक्तिवान बन कर** laws of karma को bypass किया जा सकता है। ईश्वरीय शक्तियों के साथ चालाकी, होशियारी, बुद्धि इत्यादि कभी नहीं चलती। वे तो super conscious and super intelligent हैं, भगवान को हमारी पूजा या चढ़ावा इत्यादि से क्या लेना-देना? वह तो हमारे **मन की निर्मलता** और **पवित्रता** चाहते हैं। यहीं से दयादृष्टि स्वतः ही प्रकट होने लगती है। **यह ईश्वरीय जादू है।** Therefore होश में आएँ, ईश्वरीय न्याय से बचकर, **ईश्वरीय दया के सौभाग्यशाली पात्र बनने में ज्यादा समझदारी नहीं है क्या?**

बेचा ज़मीर अपना और चाँदी खरीद ली,
इस घर की रोशनी जरा महँगी खरीद ली,
अल्लाह मेरे घर के उजालों की ख़ैर हो,
सुनते हैं, एक चिराग ने आँधी खरीद ली।

Materialism (भौतिकता) क्या है ? **सुविधाएँ, gadgets - सुखी होने के लिए**

Spiritualism (आध्यात्मिकता) क्या है ?

सुविधाओं के सदुपयोग से इन्द्रियों व मन को सुख देते हुए, ईश्वर नामक परम शक्ति से जुड़ जाना – कृतज्ञता प्रकट करते हुए

So where is the conflict between the two?

Good House, A.C., T.V., Tablet, Mobile, Money, यही सब तो हमारा मन चाहता है। अब यह सब facilities हमें ईश्वरीय शक्ति, oneness के निकट लाने में बहुत helpful हैं। **God, "The Great," के प्रति grateful होने का यह सबसे सरल और सच्चा साधन है।** God को तो एक gratitude, आभार, कृतज्ञता से भरा कोमल मन चाहिए। इन materialistic facilities के utilisation से **हमारे हृदय में दूसरों के प्रति करुणा, compassion, बढ़ती चली जाए। संवेदनशीलता बढ़ने लगे, दान-पुण्य होने लगें क्योंकि यदि ऐसा नहीं हुआ तब या तो Invisible Godly Forces हम से यह सुविधाएँ या सुख और शान्ति छीन लेंगे।**

ईश्वर यह नहीं चाहता कि हम धन न earn करें, successful, prosperous न हों। वह तो यह चाहता है कि उसके संसार को सुन्दर, सात्विक व पवित्र बनाने में अपना भरपूर योगदान करें। अहंकार मुक्त हों। I am self made - यही तो ego है। इसी को self respect में transform करके हम जीवन को रौनक वाला बना सकते हैं। जीते जी और मरते समय रोने से बच सकते हैं। यही तो divine miracle है।

माया छोड़ने के लिए नहीं मोड़ने (right use) के लिए है

तिजोरियाँ भरते हैं लोग उम्र भर के लिए,
अफसोस... मौत का फरिश्ता रिश्वत नहीं लेता।।

Honest Path

Honest Products

Honest Relations

- Body की अवश्यंभावी तथा आकस्मिक death को लगातार ध्यान में रखने से divine path, **सच्चे, लोभरहित मार्ग पर चलना अपने आप आरंभ हो जाता है।**
- Divine path में doctors से prescriptions **लेने नहीं पाने होते हैं।**
- Prescriptions लेना (Marketing) एक **selfish act** है। Prescription पाना (Divine Promotion) एक **self respect** का act है।
- Prescriptions लेने में **self interest प्रथम** हो जाता है तथा **poor patients का हित** secondary

जबकि

- Prescriptions **पाने में** "Patients First" होते हैं। तब Godly forces, doctors के द्वारा products and **path की honesty को प्रसन्नतापूर्वक reward करते हैं।**
- जब products का formulation effective हो,
  processing - complete हो
  prices - **patient** की **blessings** लेने वाली हों
  तब doctors, products में comparison के base पर honesty से impress हुए बिना नहीं रहते और righteousness के **path and products को encourage करने लगते हैं।**
- Court में कोई भी वकील, judge साहब से अपने मुवक्किल की bail या relief के लिए **याचना नहीं करता** अपितु strong evidences के base पर relief पाने के हक का इज़हार करता है। Similarly Honest products & path doctors से honour पाने के हकदार होते हैं।
- **Outwardly तो medicines similar प्रतीत होती हैं, किन्तु inwardly physical and metaphysical differences काफी ज्यादा होते हैं।**
- **'शिफा' और 'बरकत'** शब्द ऐसे ही नहीं बने हुए। अदृश्य शक्तियाँ, पूरा-पूरा impact दिखाती हैं।
- Therefore हमारे और doctors-chemists के relations, products की honesty and self respect पर based इसलिए होते हैं क्योंकि poor patients को honest products द्वारा protect करते हुए **इस जन्म के बचे हुए थोड़े समय में blessings का खजाना इकट्ठा करके संसार से पवित्रता + सम्मान सहित विदा होना है।**

रिश्ते खून के नहीं, अहसास के होते हैं,
अगर अहसास हो तो अजनबी भी अपने
और अहसास न हो तो अपने भी अजनबी होते हैं।

जो अपनी life की respect करते हैं

10 SYMPTOMS OF SELF ESTEEM

1. वे अपने ईमान (integrity) को नीचे नहीं होने देते।
2. वे ईश्वर के अकाट्य नियमों से डरते हैं, संसार से नहीं।
3. वे अहंकारी नहीं होते और हर कार्य प्रभु को ही समर्पित करते हैं।
4. वे शरीर की मृत्यु को ध्यान में रखते हुए शौक से जीते हैं।
5. वे अपने माता-पिता के पवित्र संस्कारों को और अधिक ऊँचाईयों पर ले जाते हैं।
6. वे गरीबों, बीमारों, बच्चों व वृद्ध ों के साथ चालाकी, बेईमानी नहीं करते।
7. वे क्रोधित न होकर अपनी body व mind को healthy रखते हैं।
8. वे धन कमाने के फेर में धर्म नहीं गवाँ देते।
9. वे अपने घर, दफ्तर तथा आस-पास हर वस्तु व स्थान को साफ रखते हैं।
10. वे जीवन के व्यापार में असफल नहीं होते।

Published by MISSION HAPPINESS. Ph. : 9837032053. e-mail : contact@missionhappiness.in website : www.missionhappiness.in Printed by : CANNON